International Journal of Applied Research 2016; 2(7): 499-500

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(7): 499-500
www.allresearchjournal.com
Received: 27-05-2016
Accepted: 28-06-2016

बलजीत कौर
गांव केसूपुरा जिला सिरसा – हरियाणा, भारत।

Correspondence
बलजीत कौर
गांव केसूपुरा जिला सिरसा – हरियाणा, भारत।

‘क्षणों का संकट’ में नारी–अस्मिता’

बलजीत कौर

प्रस्तावना

महीप सिंह के साहित्य में बहुत सी नारियों का जीवन ‘लिबिडो’ अर्थात् ‘काममूलक ग्रंथि द्वारा परिचालित दिखाई देता है। ‘यह भी नहीं’ उपन्यास की शांता में ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि इतनी प्रबल हो जाती है कि वह उसके प्रवाह को रोक नहीं पाती। शांता जिस कोचिंग कॉलेज में पढ़ रही होती है, उसी कॉलेज के अंग्रेजी पढ़ाने वाले नौजवान प्राध्यापक सोहन की ओर आकर्षित होती है। यहां ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि का आवेग शांता को यह भी सोचने नहीं देता कि वह उसे ही पढ़ाने वाले को अपना देहार्पण करने के लिये तैयार है। एक दिन वह सोहन के साथ रात लेट शो देखकर, राजपथ पर चले गये और वहां देर रात तक घास के मैदानों पर घूमते रहे। सोहन डर रहा था, लेकिन शांता उसके साथ बेधड़क घूम रही थी। इसके बाद शांता का अंदर का आवेग सोहन को खींचकर सुनसान जंगल में ले जाता हैं शांता ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि के प्रबल प्रवाह में कैसे बहती चली जा रही थी, इसका लेखक ने उपन्यास में इस प्रकार उद्‌घाटन किया है–

‘‘उस रात वह कितनी बेचैन थी ... लगता था...एक आग सी में जल रही थी... वह बार–बार सोहन को दबोच लेती थी और सोहन था कि उसका अंग–अंग कांप रहा था। उस रात वह कितनी उत्तेजित थी! लगता था कहीं से एक पहाड़ी नदी उसके अंदर उमड़ आई है ... जैसे वह सारे किनारे... सारे बंधन तोड़ती चली जा रही है।[1]

शांता के अंदर ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि का तेज़ प्रवाह उसे घर से भागकर सोहन के साथ प्रेम–विवाह करने पर मजबूर करता है। इसके बाद सोहन भी शांता की तीव्र यौन अतृप्ति को तृप्त करने में असमर्थ हो जाता है। इसलिए शांता की ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि उसे जीत, खोसला, दर्शन, विकास, राय और प्रीतम लाल के सहवास की ओर प्रवृत करती है।

‘बाद की बात’ में रोमा अपने साथ रेडियो स्टेशन में काम करने वाले बलबीर की तरफ आकर्षित होती है और उससे विवाह पूर्व ही यौन संबंध बना लेती है, जिसका कारण ‘लिबिडो’ ग्रंथि है। रोमा और बलबीर के रोमांस की चर्चा सारे स्टूडियो में खुलेआम होती है, लेकिन उसके अंदर ‘इलेक्ट्रा’ ग्रंथि का इतना तेज़ प्रवाह है कि वह इन बातों की कोई चिंत नहीं करने देता। इसके बाद रोमा का आकर्शण बिंदु अविनाश नाम का पत्रकार बनता है, क्योंकि बलबीर की कहीं दूसरे स्थान पर बदली हो गयी थी और रोमा को अपनी तृप्ति के लिए किसी न किसी का सहवास जरूरी था। ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि के कारण ही रोमा कार चलाते–चलाते अविनाश से लिपट जाती है और कार रूक जाती, उसकी बत्तियां बुझ जाती–

‘‘दोनों वापस मुड़ते तो अंधेरा हो चुका होता। कार रिंग रोड या रिज रोड जैसी सुनसान सड़कों पर दौड़ती–दौड़ती कहीं भी रूक जाती। बत्तियां बुझ जाती और कार में बैठी दो आकृतियां एक–दूसरे में सिमट जाती, कार फिर आगे चलती। फिर किसी मोड़ पर अंधेरे में रूक जाती, फिर बत्तियां बुझ जाती। फिर दोनों आकृतियां एक–दूसरे में सिमट जाती।’’[2]

यहां रोमा ऐसी युवती है जिसे ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि ही विवाहपूर्व दो–दो पुरूषों के संसर्ग के लिए विवश करती है। ‘सीधी रेखाओं का वृत’ की सबी भी ‘इलैक्ट्रा ग्रंथि के कारण शादी–शुदा पुरुष मिनि की तरफ ही आकर्षित हो जाती है। वे दोनों एक कॉलेज में प्राध्यापक हैं। सवी में ‘इलैक्ट्रा’ ग्रंथि के कारण वासना का इतना तेज प्रचंड है कि वह अपने साथ प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के सामने मिनि से मिलने, उससे बातचीत करने आदि में कोई संकोच नहीं करती, जबकि मिनि उसके इस प्रकार के व्यवहार से कई बार घबरा जाता है और कहता कि और सब को छोड़ा, क्या तुम्हें अपनी नौकरी की भी परवाह नहीं है। इसके बाद उन दोनों की बातचीत होती है–

‘‘मैं अपनी नौकरी की परवाह नहीं करती’’ वह काफी तुनककर बोली थी।

''बस तुम्हारा यही पागलपन तो मुझे अच्छा नहीं लगता। जब तुम्हें इसका दौरा पड़ता है, तुम अच्छे बुरे का विचार छोड़ देती हो।''[3]

सवी का पागलपन और कुछ नहीं, बल्कि इलैक्ट्रा ग्रंथि ही है, जो अपने तेज प्रवाह में सब कुछ को बहा ले जाना चाहती है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, मानव–मन में स्वप्रेम के साथ पर–प्रेम, रचनात्मक प्रवृति के साथ विनाशात्मक प्रवृति अथवा जीवनेच्छा के साथ मरणेच्छा का अद्भुत ध्रूवत्व दिखाई देता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत इन्हें क्रमशः जीवन प्रवृति (इरोज़) और मरण–प्रवृति (थांटोस) का नाम दिया गया है। जीवन प्रवृति से परिचालित होकर मनुष्य विभिन्न लैंगिक आचरण करने लगता है। जबकि मरण प्रवृति के प्रभाववश विभिन्न विनाशत्मक कार्यों में प्रवृत होता है। उल्लेखनीय यह है कि ये दोनों प्रवृतियां एक साथ मानव में उपस्थित रहकर उसके व्यक्तित्व में यदा–कदा संघर्ष उत्पन्न कर देती है। शायद यही कारण है कि एक प्रेम करने वाला जहां अपनी प्रेयसी के साथ प्रेम से परिपूर्ण व्यवहार करता है, ऐसा करते समय चाहे उसे खुद विकट स्थिति का सामना क्यों न करना पड़े, वहीं प्रेमिका के साथ वह कभी–कभी कठोर व्यवहार करने में ही तृप्ति का अनुभव करता है। प्रेमी के पहले आचरण को फ्रायड ने 'आत्मपीड़न' और दूसरे को पर–पीड़न–रति' कहा है। व्यावहारिक जीवन में इन वृतियों के विचित्र उदाहरण अनेक बार सामने आते हैं। एक ही व्यक्ति के चरित्र में प्रेम और घृणा, दया और क्रूरता, सहानुभूति और ईर्श्या तथा जिजीविषा और मरणेच्छा का अद्भुत संगम दिखाई देता है। [4]

मनुष्य के चेतन और अचेतन मन का संघर्ष कई बार विकट रूप ले लेता है कि मनुष्य असाधारण व्यवहार करने लगता है। ऐसी स्थिति मे गतिमान दिखाई देने वाली असाधारण चित्तवृतियों में सबसे प्रमुख 'चित्तविकृति' (न्यूरोसिस) है, जो प्रायः स्वत्व–विभाजन के कारण उत्पन्न होती है। विकृत्तचित व्यक्ति का चेतन मन अपने नैतिक आदर्शों को थामे रहता है, जबकि अचेतन मन अनैतिक वासनाओं के पीछे भागता है।[5]

निश्कर्शः

कहा जा सकता है कि लेखक की मान्यता है कि 'चित्त–विकृति' से अगली स्थिति 'चित्त–विक्षप्ति की है। अचेतन में पड़ी हुई वासनाएं कई बार इतनी प्रबल हो जाती है कि मनुष्य अनजाने में ही विक्षिप्ति का सा व्यवहार करने लगता है। उसका मस्तिष्क चेतना–शून्य सा होकर उचितानुचित से सर्वथा निरपेक्ष कुछ–का–कुछ कह या कर बैठता है।

संदर्भ सूची

1. महीप सिंह, यह भी नहीं, पृ0 16
2. महीप सिंह, बाद की बात, क्षणों का संकट, पृ0 228
3. महीप सिंह, सीधी रेखाओं का वृत, क्षणों का संकट, पृ0 210
4. ब्राउन साइको डाइनेमिक्स ऑफ अब्नार्मल बिहेवियर, पृ0 159
5. जुंग, टू ऐस्सेज आन अनेलिटिकल साइकालोजी, पृ0 16